वातादिप्रकृतयः ।

जागरूकोऽल्पकेशश्च स्फुटितांघ्रिकरः कृशः ॥ शीघ्रग बहुवाग्रूक्षः स्वप्ने वियति गच्छति। एवंविधः स विज्ञेयो वातप्रकृतिको नरः ॥ पित्तप्रकृतिको लोको यादृशोऽथ निगद्यते । अकालपलितो गारः क्रोधी स्वेदी च बुद्धिमान् ॥ बहुभोक्तास्वनेत्रश्च स्वप्ने ज्यातींषि पश्यति एवंविधो भवेद्यस्तु पित्तप्रकृतिको नरः ॥ श्यामकेशः क्षमी स्थूलो बहुवोर्यो महाबलः ॥ स्वप्ने जलाशयालोकी श्लेष्मप्रकृतिको नरः ॥ दृश्यते प्रकृतो यत्र रूपं दोषद्वयस्य तु ॥ द्विसंसर्गेण जानीयात्सर्वलिंगैस्त्रिदोषजम् ॥

**Characteristics of Vata Nature**: Sleeps less, has sparse hair, cracked hands and feet, weak, moves quickly, talks a lot, and has a dry body.

**Characteristics of Pitta Nature**: Hair turns white early, fair complexion, short-tempered, sweats more, extremely intelligent, eats a lot, and has red eyes. **Characteristics of Kapha Nature**: Forgiving, has black hair, heavy-built, vigorous, and immensely strong.

A constitution with two imbalances is called a *dual-dosha constitution*, such as Vata-Pitta, Vata-Kapha, or Pitta-Kapha. A constitution with all three imbalances is called a *tri-dosha constitution*.

**वात प्रकृति के लक्षण**: कम सोने वाला, अल्प केश युक्त, फटे हुए हाथ-पाँव वाला, दुर्बल, शीघ्र चलने वाला, अधिक बोलने वाला और रूखे शरीर वाला।

**पित्त प्रकृति के लक्षण**: बाल जल्दी सफेद होना, गौर वर्ण वाला, क्रोधी, अधिक पसीना आने वाला, परम चतुर, बहुत भोजन करने वाला और लाल नेत्रों वाला।

**कफ प्रकृति के लक्षण**: क्षमावान, काले केशों वाला, मोटा, वीर्यवान और महाबली।

जिस प्रकृति में दो दोष हों, वह *दो दोष वाली प्रकृति* कहलाती है; जैसे: वात-पित्त, वात-कफ, और पित्त-कफ प्रकृति। जिस प्रकृति में तीनों दोष प्रकट हों, वह *तीन दोष वाली प्रकृति* कहलाती है।